ओमशांति! सभी सेन्टर्स के बच्चे, भले ब्राह्मणियाँ उनको मुरली समझाती होंगी, साथ–2 इतना भी समझते होंगे (कि) जब मधुबन में बाप की तरफ में जाएँगे (तो) बाप आया होगा और वहाँ बैठ करके नॉलेज देता होगा। अभी मुरली की तो बात है नहीं। 'मुरली' अक्षर तो यूँ काम में आता है कि इनको और क्या कहें। बाकी ऐसे कह सकते हैं कि हाँ, बाबा अभी परिचय देते होंगे, रचता और रचना का समाचार सुनाते होंगे; क्योंकि ऐसा तो कोई भी सतसंग में ये किसकी बुद्धि में नहीं होगा कि बाप बैठ करके सृष्टि का समाचार सुनाते होंगे कि सतयुग से, जिसको स्वर्ग कहा जाता है और फिर इस समय में कलहयुग है। सतयुग से कलहयुग, कलहयुग से सतयुग। ये समझते तो हैं कि सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलहयुग और अभी इस समय में सभी समझते हैं कि कलहयुग है। फर्क इतना है कि वो समझते हैं कलहयुग अभी बहुत चलेगा। ये दंगामा, झगड़ा, ये लड़ाइयाँ या मारा–मारी, ये कोई नई बात नहीं है, ये तो होते ही रहते हैं। ये याद पड़ता है कि बरोबर महाभारी लड़ाई भी लगी थी। अब कब लगी थी, ये भी उनकी समझ में नहीं आता है, न ही अपन को समझ में आता था। गीता पढ़ते थे। बरोबर सुनते थे कि लड़ाई लगी थी। श्रीकृष्ण भगवान बैठ करके समझाते हैं कि यादव, कौरव और फलाना थे, उनकी लड़ाई लगी, ये हुआ, ये हुआ। और तो कुछ है नहीं। कृष्ण की तो बैठ करके बड़ी लम्बी–चौड़ी जीवन कहानी सुनाई है और ये रामायण सुनाते हैं, ये करते हैं। ये तो अनादि है, सुनते आते होंगे। ये होते, ये चलता ही रहता है, बस। बुद्धि में यही है। कोई भी जो सतसंगी होगा उनकी बुद्धि में ज़रा–2 ये होगा; परन्तु तुम बच्चों की बुद्धि में तो हूबहू जैसे कि बाप की बुद्धि में, जिसकी महिमा करते हैं (कि) वो नॉलेजफुल है। उनमें कौन–सी नॉलेज है, वो तो कोई भी नहीं जानते हैं; क्योंकि वो तो गॉड के लिए कहते हैं– नॉलेजफुल है। कृष्ण के लिए तो कोई कहते भी नहीं हैं कि नॉलेजफुल है। ... ये दोनों बातें अलग हैं। ये याद तो कृष्ण को ही करते हैं कि कृष्ण ने बैठ करके ये गीता सुनाई थी। जब सुनाई थी तब महाभारत की लड़ाई लगी थी। बरोबर कहते भी हैं, राजयोग सिखलाया था। तो क्या हुआ लड़ाई के पीछे? किसका राज्य स्थापन हुआ? वो तो बिचारे मूँझ पड़ेंगे। कृष्ण तो था ही, ये सुनाते थे और लड़ाई लग गई, विनाश हो पड़ा। अभी कृष्ण भी ... खतम हो गया और क्या हुआ! बाकी कौन बचे? क्योंकि ऐसे तो नहीं है कि कृष्ण कोई आया था। वो शायद ऐसे ही समझते होंगे कि कृष्ण के तन में...। अभी दो तन तो हो भी नहीं सकते। वही कृष्ण का तन संगम पर, वही कृष्ण का तन वहाँ, ये हो नहीं सकता है। तो देखो कितनी गुह्य प्वाइंट है! है आत्मा वही, जो इस समय भी है, सतयुग में भी होगी। आत्मा वही है। तुम सभी भी, तुम्हारी आत्माएँ जो भी हैं; क्योंकि ये तो दुनिया में तुम्हारे सिवाय कोई भी नहीं जानते हैं कि ये जो आत्माएँ हैं, जिनको ब्राह्मण कहा जाता है, यही जाकर देवता बनते हैं। यह तो किसको भी पता नहीं है। ज़रा भी, बिल्कुल भी नहीं। बाबा कहेंगे ना, जैसे तुम भी तो पत्थर बुद्धि थे, तो वो मनुष्य अभी पत्थर बुद्धि हैं। बाप और बाप के इस रचना के आदि,मध्य,अंत को कोई नहीं जानते हैं। बाप कहते भी हैं, 5000 वर्ष पहले भी बाप ने कहा कि ये तो सेकेण्ड का काम है बाप से वर्सा लेना। और समझना ही क्या है बाप से! दो अक्षर समझने का है। बाप को बाप द्वारा ही जानना है और बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाएँगे और साक्षात्कार तो करा ही दिया था; क्योंकि भागवत या गीता में तो इतना नहीं लिख सकते हैं ना। हाँ, ये कहते हैं बरोबर कि जब आया था तब लड़ाई लगाई गई थी। राजयोग सीखते थे और ज़रूर वो जा करके नर से नारायण बने होंगे; क्योंकि नॉलेज थी ही राजयोग की; परन्तु इतना ज़रा–सा बुद्धि में कोई में आ नहीं सकता है। अभी तो तुम बच्चों की बुद्धि में पूरा चक्कर बिल्कुल अच्छी तरह से आ गया कि हम कैसे ये 84 का चक्कर लगाते हैं, हमारे 84 चक्कर के बीच में फिर ये दूसरे इतने सभी धर्म कैसे इमर्ज होते हैं जिससे ये झाड़ बड़ा होता है, फैन्सी बन जाता है। ये वैराइटी झाड़ में कोई काले आदमी देखो, कोई चूचे देखो, कोई फलाना। हैं मनुष्य। झाड़

मनुष्यों का है। जैसे आम का या कोई का झाड़ होता है तो जैसे आम हैं ऐसे हो जाते हैं। इसको कहा ही जाता है फिर वैराइटी यानी किस्म–2 के मनुष्य। हैं मनुष्य, इसमें कोई शक नहीं है। ये बाप भी कहते हैं मैं मनुष्य सृष्टि का बीज हूँ। जैसे कोई आम के झाड़ का बीज हो या केले का हो या कोई भी चीज़ का हो तो बीज नीचे लगाते हैं ऊपर में फल निकलते हैं। मैं सिर्फ मनुष्य सृष्टि का बीज हूँ। ऐसे कहा ही नहीं जाता है कि कोई जनावर का या फलाने का। नहीं, हम मनुष्य सृष्टि का...। जब हूँ ही मनुष्य सृष्टि का झाड़ तो फिर क्यों कहते हैं कि मनुष्य इतने जन्म लेते हैं, 84 जन्म में कुत्ता भी बनते हैं, फलाने...। जब मैं कहता हूँ मैं मनुष्य सृष्टि का झाड़ हूँ, फिर प्रश्न उठता है कि मनुष्य सृष्टि झाड़ में कोई जनावर भी आ जाए ? यानी आम का बीज है, (तो) कोई ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि उनमें मौसमी लग जाती है, संतरा लग जाता है। कभी कहेंगे? नहीं। बाप खुद आकर कहते हैं मैं हूँ ही मनुष्य सृष्टि का बीज–रूप और मैं ऊपर रहता हूँ। ये उल्टा झाड़ है। इसमें फिर हैं मनुष्य; परन्तु वैराइटी मनुष्यों की है। सो देखते हो कि बरोबर वैराइटी हो जाती है ना। पहले–2 वैराइटी आती है देवी–देवताओं की। देखो, कितने गोरे फर्स्टक्लास होते हैं! अच्छा, पीछे देखो झट आती है इस्लामियों की, बिल्कुल काले। इस्लामी जो अफ्रीकन हैं, बिल्कुल काले। अभी है तो मनुष्य सृष्टि का झाड़। फाउण्डेशन भी यहाँ से लगता है ज़रूर; क्योंकि मनुष्य तो एक/दो से लगता जाएगा ना। तो देखो, वो उस तरफ में अफ्रीकन। उनको इस्लामी कहा जाता है। ढेर वहाँ हैं। ये मुस्लिम हैं। ये मोहम्मद धर्म के हैं, वो काले इस्लामी। ये सारा मोहम्मद का धर्म है जो इस तरफ में है। ये सभी अफ्रीका की तरफ में। उनकी भी तो शाखें निकलती हैं ना। तो इस्लाम धर्म की .... शाखा है जैसे। बाप बैठकर समझाते हैं ना, ये समझ तो बिल्कुल किसमें है नहीं। साफ कहते हैं कि मैं मनुष्य सृष्टि का बीज–रूप हूँ, तभी तो मनुष्य मुझे कहते हैं– ओ बाबा! हे बाबा! अभी कौन कहते हैं 'बाबा'? आत्मा कहती है 'बाबा'। हे बाबा! ओ बाबा! ओ शिवबाबा! चित्र भी है। ऐसे तो नहीं है कि नहीं हैं। वो दिखलाते हैं कि हम आत्माएँ उस परमात्मा के हैं। सभी जो भी आत्माएँ हैं, सब उनको बाबा कहेंगी। तुम किसको भी समझाओ तो भी कहेंगे कि हमको खुदाताले ने पैदा किया है, हमको गॉड फादर ने रचा है। कैसे रचा उस इनकारपोरियल ने, ये भी दिखलाते हैं कि बरोबर ब्रह्मा द्वारा रचा। ये ब्रह्मा कहाँ से आया? देखो, वो किसको पता नहीं पड़े; क्योंकि ब्रह्मा भी तो देवता है ना। अरे, वहाँ तो कोई नाम बदलते नहीं हैं, वहाँ तो उनका नाम ब्रह्मा ही ब्रह्मा है। अभी यहाँ बाप आ करके समझाते हैं कि बच्चे, मैं(ने) जब एडॉप्ट किया है तब इसका नाम...। सतो देखो, एडॉप्ट करके दिखलाया है, इनका नाम ब्रह्मा, इनका फलाना, इनका फलाना। ये भी तो वण्डर है ना– इतने सब नाम उसने कैसे भेज दिए! फट से एकदम। एक ही दफा नाम आए थे, लिस्ट बड़ी ते बड़ी। ये बाप बैठ करके समझाते हैं ना कि मैं कैसे एडॉप्ट करता हूँ। जब एडॉप्ट करता हूँ तो नाम फिरता है; क्योंकि वो कोई दूसरे का हो गया ना। तो नाम हमेशा फिरता है। देखो, कन्या को भी .. वो नाम होता है, तो वो जब शादी करती है तो फिरा देते हैं। है ना बरोबर। तो बाबा बोलते हैं वो भी तो एडॉप्शन है ना। तो ये भी एडॉप्शन में नाम जरूर फिटा। देखो, सन्यासी एडॉप्ट करते हैं...फिर नाम ही फिरा देते हैं। वो नाम बदल कर देते हैं। ये कोई नई बात तो नहीं है ना। ये मिसाल दे करके समझाते हैं कि मैं जब आया हूँ, जब मेरे बने हैं, एडॉप्ट किया है, तो मैंने इनका नाम रख दिया ; परन्तु फिर भी बाबा कहते हैं, ये नाम तो मैंने शरीर का रखा है ना। आत्मा का नाम तो नहीं फिर सकता है ना। मैं आत्मा से बात करता हूँ और उनको कहता हूँ, जो बने हैं, जिस नाम के बने हैं कि बच्चे, अब जिस देह का नाम मैंने बदलाया है, उनको भी भूल जाओ। उनसे भी कोई का ताल्लुक नहीं है। तुम आत्मा हो, अभी मामेकम् याद करो। तो देखो, शिक्षा देते हैं ना और फिर तुम भी जानते हो– बरोबर हम कल्प–2 बाप से ये शिक्षा पाते हैं और अपना पद पाते हैं। बाप ये कोई नई बात थोड़े ही बताते हैं। बाप ने तो हमको इन्यूमरेबल टाइम्स (यानी) अनगिनत दफा आ करके शूद्र से ब्राह्मण, ब्राह्मण से देवी–देवता और क्षत्रिय धर्म– दोनों

में लाया है। वर्सा दिया। कोई नई बात तो नहीं है ना। अभी देखो तुम समझते हो, बुद्धि में बैठता है कि नई बात थोड़े ही है। ये तो कल्प–2 हम 84 का चक्कर जब पूरा करते हैं, बाबा आता है। आ करके हमको फिर से अपना वर्सा दे देते हैं और ये समझाते हैं कि पापात्मा से पुण्यात्मा कैसे बने, पतित से पावन कैसे बने। सो हूबहू कल्प के माफिक हमको फिर समझाते हैं कि मेरे मीठे बच्चे, अभी मेरे पास आना है और श्रीमत पर श्रेष्ठ बनना है। अच्छा, मैं कहता हूँ मुझे याद करो तो मुक्तिधाम में पहुँचेंगे यानी शांतिधाम में जाएँगे। तुम शांति तो माँगते ही रहते हो– शांति, शांति, शांतिदाता। देखते भी हैं, ऐसे कहते हैं ना– शांतिदाता, शांतिदेवा। ये किसके लिए कहते हैं शांतिदेवा यानी हमको शांति दो? अभी पुकारते हैं बाप को कि शांतिदेवा यानी हमको शांति दो। बुद्धि में वो आता है, फिर यहाँ आकर कहते हैं कि शांति कैसे मिले? साधु को शांति कैसे मिले? अरे पर, तुम माँगते ही हो प्रार्थना में भक्ति में शांतिदेवा। तो शांतिदेवा जब कहते हो तभी उनको याद करते हो ना और सभी ऐसे कहते हैं। ...बहुत श्लोक हैं और ये भजन–गीत भी हैं शांति के लिए। महिमा फिर भी उनकी ही करते हैं। फिर भी जाते हैं मनुष्यों के पास, सद्गुरु के पास, फलाने के पास (कि) शांति दो। अभी देखो, बाप आते हैं ना। एक को शांति मिलेगी। सभी शांति का भी अर्थ तो समझते नहीं हैं। अगर मनुष्य शांति में बैठे तो काम कैसे कर सके! शांति तो आत्मा का स्वधर्म है। उनको तो ये शरीर मिला है कर्म भोगने के लिए। शांतिधाम में था तो सही ना। शांतिधाम में रह करके फिर यहाँ आते हैं पार्ट बजाने के लिए। नहीं तो आत्माओं का तो है ही शांतिधाम। बस, फिर ये शांतिधाम ऊँच हो गया ना, बाबा की मंज़िल हो गई ना। शांतिधाम हमारा स्वीटहोम, फिर है सुखधाम, ज़रूर पहले आएगा। ऐसे नहीं है कि शांतिधाम से हमको कोई कलहयुग में भेज देगा। हमको सतयुग में ज़रूर भेज देने का है; क्योंकि हम सतयुग के ही वासी थे। तो देखो, बुद्धि में सारा बैठ गया, हम फिर सतयुग में आएगा और फिर जो–2 कमती पास होगा वो त्रेता में आएगा। चलो, ये बनेगा, ये बनेगा। फिर हम जानते हैं कि द्वापर से फिर ये शुरू हो जाएगा। ये अभी बुद्धि में है ना। और कोई की बुद्धि में ये थोड़े ही रखा हुआ है। एक बात भी नहीं, बिल्कुल ज़रा भी नहीं, कुछ भी नहीं। दुनिया की बुद्धि में वही बातें हैं जो आगे हमारी बुद्धि में सभी बातें थीं– इस पुरानी दुनिया की, मामा,चाचा,काका,दादा, धंधाधोरी, ये फलाना करो। अभी देखो, हम कौन–सा धंधा कर रहे हैं! ये भी धंधा है ना; क्योंकि सौदागरी है ना। इसको सौदागरी भी कहा जाता है। कोई विरला व्यापारी जो इस सौदागर से सौदा लेवे। तो विरला है ना– कोटों में कोऊ, कोऊ में कोऊ, कोऊ में कोऊ। बरोबर बात तो ठीक है। मनुष्य लैंग्वेज़ेस के कारण वो सब बातें फिरा रहे हैं, बाकी बातें तो वही करते रहते हैं। पुकारते रहते हैं, कहते रहते हैं– तुम्हीं से बैठूँ। किसके लिए कहते हो? कृष्ण के लिए तो कह नहीं सकते हैं (कि) तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खेलूँ। अभी सभी थोड़े ही कृष्ण के साथ खेलेंगे। वाह! कृष्णपुरी में जो जाएँगे वो भी सब नहीं खेल सकेंगे। सिर्फ जो कुटुम्ब के भाँती बनेंगे, जो माला के दाने बनेंगे, वही उनसे बैठेंगे,खाएँगे,कूदेंगे, ये करेंगे। वो वही बनेंगे जो फिर इनके साथ होंगे। देखो, बाप के साथ खेलते हो, कूदते हो, खाते हो, पीते हो, बैठते हो– समझाते हैं। ये तो वण्डर हुआ ना। बाप अपना बनाय करके फिर बैठ करके शिक्षा देते हैं फट से यानी ये जो ज्ञान है सो झट शुरू हो जाता है; क्योंकि बुजुर्ग है ना। छोटा तो नहीं है, बुजुर्ग है। तो निकलेगा ही ज्ञान। बाप बैठकर झट परिचय सिखलाएँगे। कृष्ण तो जन्म लिया, वो तो जब बड़ा हो तब कुछ ज्ञान की बात निकले। ये तो आने से ही शुरू कर देते हैं। अभी तुम अनुभवी हो, जानते हो आने से ही शुरू हुई है। अभी ये पता नहीं, हाँ, ये ज़रूर है कि जब तलक शरीर होगा तब तलक समझाते रहेंगे और सब बात समझाते रहते हैं– बच्चे, ये माया बड़ा तूफान देंगे; क्योंकि बहुत बड़ी मंज़िल है, बड़ी जबरदस्त मंज़िल है यानी विश्व का मालिक बनते हो, कोई कम थोड़े ही है। बड़े–2 राजाएँ बनते हैं तो भी बहुत कुछ दान–पुण्य करते हैं, बहुत–3 जब कोई करते हैं तब राजाएँ... सो भी क्या! एक जन्म। सो भी बीमारी–सीमारी तो ... है। कोई सुखी थोड़े ही बनते हैं। यहाँ तो देखो

तुम बच्चों को कितना ऊँच ते ऊँच वर्सा मिलता है– न रोग, न बीमारी, न दुःख। तो जब बाप से पढ़ाई से ऐसा वर्सा मिलता है तब विचार करो कि बाप का तो बने; परन्तु फिर पढ़ाई कितनी चुस्ती से चाहिए, कितनी समझने की चाहिए। फिर बाप कहते हैं कि बच्चे तुम ब्राह्मण हो। तुम्हारा धर्म ही है ये सत्यनारायण की सच्ची कथा सुनाना। वो भी तो ब्राह्मण हैं ना। वो सभी ब्राह्मण ही सुनाते हैं। सत्यनारायण की कथा कहो, तीजरी की कहो, गीता की कहो, भागवत की, वगैरह–2 ये ब्राह्मण ही हैं अक्सर करके। अरे, अभी ये सन्यासी घुस पड़े हैं; परन्तु इनका घुसना भी ड्रामा में है। नहीं तो एक दफा घर छोड़ा फिर उनको यहाँ कभी नहीं आना चाहिए। देखो, खुद मालिक भी नहीं आते थे, चेलों को भेज देते थे; परन्तु पहले खुद भी तो आए होंगे ना, किसके तो चेले बने होंगे जो पहले मदद भी की होगी, पीछे बड़ा बन गया होगा, दूसरा चेला आया होगा तो खुद बंद कर दिया होगा। नहीं तो इनकी बड़ी–2 कायदे से बात थी। बाप बैठकर समझाते हैं ना– बस, फिर इनको कोई गृहस्थ के इसमें आना थोड़े ही है। वो बोलते हैं कि हम हर्थ एण्ड होम छोड़ा। अभी भी कहते हैं। हर्थ–होम माना घर–बार छोड़ा, धन–दौलत सब छोड़ा। बरोबर छोड़ा था, अभी तो तमोप्रधान बन गए, अभी तो हर्थ–होम क्या, अभी तो घर में आ गए, जैसे दूसरे गृहस्थी फ्लैट में रहते हैं, धंधा करते हैं। दूसरे वो धंधा करते हैं, ये शास्त्र वगैरह सुने हैं, उसका धंधा करना होता है। नहीं तो बाबा ने समझाया है (कि) सन्यासियों को भक्तिमार्ग नहीं चाहिए; क्योंकि भक्तिमार्ग वालों को ही ज्ञान मिलना है। ये तो भक्ति छोड़ देते हैं ना। ये है भक्ति और ज्ञान। अभी तुम अच्छी तरह से समझ गए जिन्होंने जास्ती भक्ति की। किसने जास्ती भक्ति की, अभी तुम्हारी आँखें खुल गईं कि हम सो जो देवता थे सो क्षत्रिय बने, फिर वैश्य बने और फिर उस समय से हम फिर पुजारी, पूज्य से फट से पुजारी। पुजारी बने तो भक्ति भी हमको ही करनी है ना, और तो कोई को नहीं करनी है। बस ये भारतवासी जिसको कहा जाता है, हमको ही करनी है। अब दूसरे कोई धर्म को भक्ति नहीं करनी है। हम(ने) ज्ञान से इतना सुख पाया है, दूसरे कोई...। मैं यहाँ की बात करता हूँ। सन्यास धर्म तो है ही हर्थ एण्ड होम को छोड़ने का। उनको तो वहाँ ही...। हाँ, वो मदद बहुत करते हैं। बाप ने समझाया है कि छोड़ करके, पवित्र रह करके ये मदद बहुत की है, नहीं तो भारत बहुत ही हिल जाता। देखो, बहुत पतित बन गए हैं ना, तो अभी देखो कितना हिलेंगे! कितने विनाश ...कि ये सभी आग लगेगी, ये लगेगी...। तो देखो, टू मच हो गया ना। बहुत पतित हो गए तो अब आग लगेगी। अच्छा, आग क्यों लगेगी? क्योंकि पतित के बाद फिर पावन दुनिया। जब भी किसको पावन करना होता है तो आग में डालते हैं, ये पावन हो जाएगा। ये भी यहाँ भारत में बहुत है कि आग में डालने से चीज़ शुद्ध हो जाती है। बरोबर ये दिखलाते भी हैं कि होलिका जब होती है (तो) आत्मा शुद्ध हो जाती है और शरीर जल जाता है। तो फिर इतनी जो आत्माएँ हैं वो जल करके क्या होती हैं? वो तो शुद्ध हो जाती हैं ना। भले हम वो समझा देते हैं कि इनको हिसाब–किताब भी चुक्तू करना होता है। अरे, ये तो कोई दूसरा नहीं जानते हैं ना। ये ऊपर की बातें तो ठीक हैं ना (कि) होती है, यह दिखलाने के लिए कि आत्मा अमर है, शरीर छूट जाता है। फिर ज़रूर आत्मा को दूसरा शरीर चाहिए। तो होलिका जो ये लगती है, देखो, घर–2 में दिखलाते हैं। कितनी जगह में आग जलाते होंगे! तो सभी घर में आग लगेगी, सारी दुनिया को आग लगेगी ना! तो फिर आत्माएँ...। ये जो होलिका मनाते हैं ना, अभी ये जब विनाश होगा तब इनका यह ... भक्तिमार्ग में चला जाएगा। जो इस समय में हो जाते हैं, ये दीपमाला में जो भी रहस्य है, रखड़ी बंधन, होली, दूजा फलाना, ये सब इस समय की बातें हैं; परन्तु मनुष्य तो कुछ भी जानते नहीं हैं। कब से शुरू हुआ? अनादि से। अनादि का अर्थ कोई नहीं जानते हैं। हाफ एण्ड हाफ तो मालूम नहीं है उन बच्चों को कि हाफ एण्ड हाफ है नई और पुरानी। युग भी ऐसे ही, चार युग चार ही समय के हैं। उन्होंने तो बहुत ही कथाएँ उल्टी–सुल्टी लिख दी हैं। तो बाप बैठकर समझाते हैं, ये तो हुआ विशाल बुद्धि वालों के लिए, जिनको बहुत कुछ समझाना है। फिर भला, थोड़ी बुद्धि वाले कैसे समझावें? ये तो हुआ विस्तार।

थोड़ी बुद्धि वाले के लिए भी तो समझाया जाता है ना। ...ये देवताएँ स्वर्ग में राज्य करते थे ना। तो भारत स्वर्ग था। अभी नर्क बना है ना। तो ज़रूर मनुष्य को 84 जन्म भोगना तो है ना। 84 भी ज़रूर जो पहले आएँगे वही भोगेंगे ना। पीछे वाले 84 थोड़े ही भोगेंगे। पीछे कमती–2... तहाँ कि मैक्सीमम 84, मिनीमम एक। शुरू तो होता है ना। एक से ले करके शुरू होगा। ..... 84 से ले करके चले आओ एक जन्म तक। पिछाड़ी में अभी जो आएँगे क्या होगा! वो तुम्हारी बुद्धि में अभी अच्छी तरह से आया कि तुम 84 पूरी भोगती हो एकदम। अभी तुम्हारा ये अंतिम जन्म है। तुम जानते हो कि हमारा अंतिम जन्म है और तुमको खुशी होती है ज़रूर कि अभी हम...। अभी तुमको रंज नहीं होना चाहिए। इतना पक्का हो जाना चाहिए। पिछाड़ी जब हो, मौत होगा ना...। एक आखानी होती है, कहते हैं इतना–2 मिर्च खाएँगे, पानी पिएँगे। डरना नहीं। पीछे ऐसे कह देते हैं– देखो, तुम डर गए! है अभी की बात कि कोई बात से नहीं डरना है। बड़े जबरदस्त तूफान लगेंगे। लड़ाई के समय में तुम क्या समझती हो, बस ये होगा। पाकिस्तान की कोई लड़ाई नहीं थी, वो तो पार्टीशन था। ये तो रक्त की नदियाँ बहती हैं। बड़ी खौफनाक लड़ाई है, बात मत पूछो। तो बोल देते हैं इतना सब तुमको जो समझाया जाता है कि पिछाड़ी में ये सब देख करके दहकना नहीं; क्योंकि तुम जानते हो कि बाबा हमारे लिए विनाश कर रहे हैं। हमको तो ये शरीर भी छोड़ना है, पुरानी जूती है। हमको तो जाना ही है। तो जैसे एक बात है, कुछ भी हो जाएगा हम कभी नहीं डरेगा। हम तो बाबा की याद में रहते हैं। पीछे वो डर निकल जाता है। पीछे जो तूफान आते हैं ना, ये जब पिछाड़ी हो जाती है तब ये तूफान कम होते हैं। नहीं तो पिछाड़ी तक तूफान बड़े जोर से आएँगे। तुम लोग ऐसे कभी नहीं समझना। अनेक प्रकार के तूफान आएँगे। ये मर गया, वो मर गया, ये पैसा चला गया, ये होगा, पिछाड़ी में तो ऐसे ही होगा ना। ये पैसा चला गया, ये जल गया, इनका मकान जल गया, अर्थक्वेक में सब खलास हो गया– सो ढेर होंगे। दूसरे मनुष्य तो वो पहले से ही थोड़ा देखगा और डरेगा। तुमको तो डरना नहीं है ना। तुम तो देखेंगे, तुम्हारे सामने रक्त की नदियाँ बहती रहेंगी, तुम तोपों का आवाज़ सुनते रहेंगे। देखो, अभी भी नज़दीक में रहते हैं। तोपों की आवाज़ में क्या डरते नहीं होंगे? परन्तु ऐसे नहीं है कि तुमको कहाँ से हटना नहीं है। कोई ऐसी आफत आती है तो हटना तो ज़रूर होता है ना। जैसे बाबा कहते हैं जब देखो कि ये बहुत गड़बड़ हो गई है और लड़ाई की कुछ तेज रफ्तार हो गई तो तुम चले आना हमारे पास। यहाँ आ करके रह जाना। बाप के सामने होंगे तो अच्छा ही है। ... हंगामा होगा। तो तुम पहले से ही आकर यहाँ रह जाते हो झट; क्योंकि ... चलती तो है ना बड़ी जोर से। कोई एक समय में थोड़े ही कुछ हो जाता है। टाइम लगता है। पहले–2 विनाश तो विलायत में ही शुरू होता है। तो यहाँ धक आ जाता है बिल्कुल और समझ लेते हैं (कि) अभी महाभारत की लड़ाई शुरू होती है, इसमें टोटल विनाश। वो प्रलय दिखलाय दी है ना... समझाते हैं टोटल विनाश; पर नहीं, हमको तो यहाँ स्थिरियम रहना है। महावीर हनुमान का वो दिखलाते हैं ना– अडोल रहेंगे, अचल रहेंगे, ये करेंगे। तो जो मेहनत है, इसमें है। तूफान भी आता रहेगा...। तूफान में भी तूफान हुआ ना। तूफान मौत का, फलाने का, सारे नुकसान का। ये मरे, ये सब मरते रहेंगे। अरे, विलायत में बहुतों का मरेंगे, ढेर के ढेर मरेंगे। यहाँ...तो आते रहेंगे ना, डर तो जाएँगे ना (कि) विलायत में लड़ाई शुरू हुई, फलाना मरा। रोते रहेंगे। कैसे आएँगे? आ जावे कोई, 10/20 हज़ार खर्च करके कोई एरोप्लेन की टिकट मिल जावे तो आ जावे। बहुत ही सुनाते रहेंगे ना ; परन्तु तुमको यहाँ बहुत अडोल होकर रहना है। अपने घर में बैठकर ये पुरुषार्थ करना है कि हम तो अभी शरीर का भी ख्याल नहीं करते हैं, ये भी तो पुराना है। हमको तो अभी घर जाना है और ये पुराना कपड़ा क्या करें! तुमको दिन–प्रतिदिन नफरत आती–जाती रहेगी। तो बैठ करके ये पुरुषार्थ करना पड़े ना कि अभी हम शिवबाबा के पास जैसे कि जाते हैं। हम शरीर का ख्याल नहीं करते हैं। तो देखो, ऐसी जब किसकी–2 अवस्था आ जाती है तो वो अन्कॉन्शस हो जाते हैं; परन्तु वो अन्कॉन्शस गिरने की नहीं होती है। बस, ये एकदम

शांत में हो जाते हैं, जैसे कि बाबा कहते हैं विश्रामपुरी में बैठा है। जैसे यहाँ बैठे हो तो गिरते थोड़े ही हो, गुम हो जाते हो। पीछे कोई बोलते हैं कि हम पार गए, कोई बोलते हैं रास्ते में थे, फलाने थे; पर गिरते तो नहीं हैं ना। तो अपनी ये सभी अवस्था अच्छी तरह से समझ करके पक्की करनी है, बाप जो बैठकर समझाते हैं और बाकी तो मनुष्यों को समझाना दिन–प्रतिदिन बहुत सहज है। अरे भाई, तुम खुद मुख से कहते हो कि हमारा बाप स्वर्गवासी है तो नर्क में थे ना। नर्क तो भला है ना। यूँ भी कहो कि नर्क है। स्वर्ग में इनका राज्य था ना। तो चलो, अभी तो बदलना चाहिए ना। ये महाभारत की लड़ाई लग रही है और हम नॉलेज समझा रहे हैं। बाबा क्या कहते हैं? अभी यात्रा पर जाना ही है; इसलिए अभी तुम यात्रा सीख लो, जो उस यात्रा से फिर आना नहीं है। अभी उस यात्रा में क्यों सीखते हैं? क्योंकि उस यात्रा से ऐसा नहीं होता है कि बुद्धि का योग लगता है। नहीं, वो तो यात्रा कर–करके, फिर आ करके पतित बनते हैं। यहाँ तो उस दुनिया में नहीं आने का है और पवित्र बनना है। पवित्र बनने बिगर तो कोई जाएगा नहीं, नहीं तो सज़ाएँ खाएँगे, नहीं तो ये करेंगे, ये करेंगे। तो बच्चों को शिक्षा ही.....। वो बोलते हैं कि मेरे को जितना याद करेंगे इतना ऊँचा वर्सा तुम पाएंगे ; क्योंकि रेस है। जो हमको पहले आकर हाथ लगाएँगे तो पहले इम्तहान जाकर लेंगे। उनके लौटने की बात नहीं। वहाँ तो स्कूल में जा करके हाथ लगाकर फिर यहाँ वापस आवे तो वो उसको विन करे। नहीं तो रास्ते में लौटते वक्त भी कोई थक जाते हैं। यहाँ फिर वो लौटने वाली रेस नहीं है। यहाँ सिर्फ भागने वाली रेस है। वो रेस होती है ना, झण्डे को हाथ लगाकर लौट करके आवें। इसका अर्थ क्या है कि नहीं, यहाँ जो पहले जाएगा सो पहले तख्त पर जाकर बैठेगा। ये लौट करके यहाँ आने का नहीं है; क्योंकि वो बाप समझाते हैं ना, तुम यहाँ से गए (तो) गए, फिर यहाँ तुमको नहीं आना है। यहाँ से जो जाए, जा करके पहले हाथ लगाएगा सो पहले गद्दी पर जाकर बैठेगा। देखो, कैसी फर्स्टक्लास रेस है और बहुत समझ की रेस है ना। आत्माएँ तो सब कुछ समझती हैं ना। आत्मा इन ऑरगन्स द्वारा, कर्मेन्द्रियों द्वारा बाबा की वाणी समझती हैं और फिर समझाते हैं। अब ये जानते हैं कि बरोबर हमारा बाबा ये तो बिल्कुल ठीक बताते हैं और हूबहू कल्प–2 हमको ऐसे ज्ञान देते आते हैं। इस समय में आकर कहते हैं– बच्चे! अभी बच्चे किसको कहा? आत्मा को कहा। वो गीता में तो नहीं लिखा है। हे अर्जुन– बाबा ऐसे तो नहीं कहते हैं। 'हे बच्चे' कहते हैं। ऐसे तो नहीं कहते हैं कि हे गुलज़ार, हे फलाना। .. कितने का नाम लेकर कितना लेंगे! यूँ कहे– हे बच्चों। देखो, तो कितना फर्क हो गया! हे बच्चों, अब सभी मामेकम् याद करो। अभी नाम कितने का लेंगे। वहाँ तो अर्जुन का नाम ले करके खलास कर दिया है और यहाँ है पाठशाला। पाठशाला में कभी–2 कोई प्रश्न पूछेगा कोई से– हे फलाना, तुम्हारे से प्रश्न पूछता हूँ। बाकी पढ़ाते तो सबको हैं ना। तो ये भी बाप पढ़ाते हैं। अरे, यही बड़ी बात (है)। बाप सो भी कौन–सा बाप? पहले तो बाप का बनें, तुम्हारे द्वारा पहचानें कि हम अभी उनके बने हैं। उसने हमको बनाया है, एडॉप्ट किया है। अभी हमको बैठ करके अपनी सारी रचता और रचना का नॉलेज सुनाते हैं। अब ये तो सुनाते हैं तो तुम सुनो। हम जो कहते हैं कि बाप हमको, जो रचता है, वो रचना सतयुगी से ले करके कलहयुग के अंत तक, फिर कलहयुग से सतयुग की आदि ये कैसे चक्कर फिरता है सो बैठ करके अभी समझाते हैं। सतयुग में नहीं समझाएँगे; क्योंकि पीछे त्रेता–द्वापर आने वाली है। ज़रूर इस समय में आएँगे जबकि संगम पूरा..., कल्प पूरा होता है। कल्प जब पूरा होता है तो जो पास्ट हो गई उनका सभी समाचार हमको सुनाते हैं। हिस्ट्री समझाई जाती है ना– लांग–2 एगो क्या हुआ ? बाप बैठकर बताते हैं ना– 5000 वर्ष पहले भी मैंने तुमको ये नॉलेज सिखलाई थी। फिर क्या हुआ था? फिर तुम जा करके देवी–देवता बने। ये आखानी हुई ना। तो देखो, पाई–पैसे की आखानी, सेकेण्ड की आखानी। तो ऐसे कोई को भी समझा तो सकते हो ना कि बाप आते हैं, आ करके हमको आखानी सुनाते हैं। अरे भई, सत्यनारायण की कथा कहो, आखानी कहो, बात एक ही है ना। अमर कथा कहो, वो भी तो आखानी है ना। तो बाबा आ करके

हमको आखानी सुनाते हैं। ऐसे समझाते हैं– तुम बच्चे! अभी तुम ब्राह्मण हो, पीछे तुम देवता बनेंगे। ...इतना जन्म देवता बनेंगे, फिर क्षत्रिय बनेंगे, फिर वैश्य बनेंगे, फिर शूद्र बनेंगे। तुम्हारी डिनायस्टी की वृद्धि होती रहेगी। वृद्धि होते–2 फिर बीच में ये इस्लामी आएँगे, बौद्धी आएँगे। देखो, अभी तुम्हारी बुद्धि में नॉलेज का पूरा चक्कर बैठा हुआ है। बीज से ले करके झाड़ तक और फिर झाड़ पुराना होता है, विनाश फिर कैसे होगा, कैसे ये सब जा करके वहाँ मूलवतन में मर्ज होंगे जो फिर वो नंबरवार यहाँ आएँगे। देखो, अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा...। ये मनुष्य सृष्टि के बीज माना भगवान बाप..... झाड़ रूपी सृष्टि कहो या ड्रामा कहो, ये कैसे चक्कर लगाता रहता है– सतयुग, त्रेता, द्वापर। फिर हम वापस कैसे जाते हैं, फिर कैसे चक्कर लगाते हैं, ये तो बिल्कुल समझाना होता है ना। तो जो समझेगा वो वण्डर खाएँगे। अभी वण्डर खाएँगे (कि) ऐसा ज्ञान कोई नहीं सुना सकते हैं। अरे पर बुद्धू! ये ज्ञान कोई नहीं समझाते हैं, पर तुम बैठ करके समझो ना और बाप से वर्सा लो।.....हमें ऐसा ज्ञान तो कभी कोई ने नहीं सुनाया, ये तो बड़ा अच्छा ज्ञान है। अच्छा, फिर हम भी तैयारी करके आएँगे और तैयारी करके आते नहीं हैं। बोल देते हैं बहुत– ज्ञान बहुत अच्छा है, हम फुर्सत निकाल करके फिर आ करके अच्छी तरह से समझेंगे। यहाँ तो बहुत आते हैं। मिलते भी हैं बहुत ही। हम फुर्सत निकाल करके आ करके मिलते हैं। फुर्सत निकाल कर आ गए ...ये माया ने चटकाया। यानी वो फुर्सत की क्या बात है! पहले निश्चय हो गया कि बरोबर बाप से वर्सा मिल रहा है। फिर बाप से वर्सा मिलता है तो फुर्सत निकालकर आकर लेंगे या कमाई को लग जाना चाहिए ; क्योंकि उनको कमाई का कद्र नहीं रहता है कि उस कमाई से तो ये सच्ची कमाई है, ये तो बाप से वर्सा लेना है। समझने के लिए अभी क्यों न बैठ जावें ! ये ऐसी बात है जिसे समझने से हम स्वर्ग के मालिक बन सकते हैं, उसके लिए हम ऐसे क्यों कहें कि फुर्सत ले करके आवें ? अभी हम यहाँ बैठे हैं, बाहर में गया, एक्सीडेंट हुआ, मरा। फुर्सत कहाँ गई ? ऐसे एक्सीडेंट बहुत होते हैं, सेकेण्ड में मर जाते हैं। जब कोई आते हैं, बोलते हैं फुर्सत ... तो उनको ऐसे भी कह देना चाहिए– अच्छा, बाहर में जाते हो, हार्ट अटैक हो जाएगा। तुमको मालूम है कि फिर तुम ये वर्सा नहीं पाय सके। क्यों न अभी से ही शुरू कर दो। वर्सा क्यों नहीं पाते हो? कमाई के लिए ही क्यों कहते हो (कि) फुर्सत। ये पढ़ते हो तो फुर्सत है ना, जो जा करके 4 घण्टे पढ़ते हो ; पर ये तो पढ़ाई है ना। इसमें फुर्सत की तो कोई बात ही नहीं है। ये तो पढ़ाई है, कमाई है। अभी से लग जाओ। बाहर जाएँगे, काल खा जाएगा; क्योंकि बहुत लोगों को, काल, काल, कल आएँगे, कल आएँगे, कल–2 करते उनको काल खा गया। वो मर गए। बाप से वर्सा नहीं पा (सके)। इतना तक भी ; परन्तु बताना ऐसा चाहिए। है बच्ची ; परन्तु जैसे कि कोई शेरनी है। ....एक जुबान से अक्षर निकले दूसरा ख्याल करे, दूसरा ख्याल करे तीसरा मूँझे ..। नहीं, अच्छी तरह से पकड़ लेना चाहिए। अगर वो कोई समझते हैं कि बड़ा अच्छा ज्ञान है, मैंने कभी नहीं सुना। अच्छा, बड़ा अच्छा ज्ञान है, तुम्हें मालूम है ना इस समय बाप से वर्सा मिलता है। अच्छा, फिर लग जाओ बाप का वर्सा लेने के लिए ; क्योंकि जितना बाप से वर्सा लेंगे और सुनेंगे और याद करेंगे इतनी तुम्हारी कमाई शुरू हुई। कौन–सी कमाई शुरू हुई है? बस, स्वर्ग के मालिकपने की कमाई। फिर कह देते हो कि हम फिर थोड़ा फुर्सत...। अरे पर, कल मर जाएगा तो फिर खेल ही खलास हो जाएगा ना। अभी देखो, मौत तो सिर पर खड़ा ही है। काल–2 करते बहुत ही मर जाते हैं; इसलिए अभी से ही शुरू करो अगर तुम भाग्यशाली हो। तो झट उनकी रग का पता पड़ जाता है कि कोई हमारे कुल का है, कोई अच्छा है या ..... तो परीक्षा भी ले लेनी चाहिए। इतनी होशियारी चाहिए। इतना जोर से पकड़ना चाहिए। तो फिर हम भी समझ जाएँगे कि ये हमारे कुल का है या न है या पीछे देरी से आने वाला है जो थोड़ी कमाई करने वाला है। नहीं तो उनको बड़ा जोर से पकड़ना चाहिए; क्योंकि तुम उनका कल्याण करते हो ना। वो तो बिचारे माया के चम्बे में हैं। वो तो आग में जला हुआ है, पड़ा हुआ है। जैसे सब जल मरते हैं। जलते–मरते हैं ना। वो नोट को जलाते हैं ना। कोने से जलाकर दिखलाते हैं वो पिछाड़ी तक आ जाते हैं। अभी तो ये दुनिया जल करके बाकी जा करके नोट का इतना कोना बचा है। तो इनको बचा करके फिर एकदम फुल

नोट इनको दे देना है बदल करके। इतना बुद्धि में कमाई का शौक चाहिए, तभी तो ऊँचा पद पा सकेंगे। मेहनत इतनी चाहिए। बिल्कुल ही फथकना चाहिए कि बाबा, हम जा करके कोई को उड़ाऊँ और फिर लक्षण भी अच्छे चाहिए। स्वभाव भी नहीं होना चाहिए। बड़ा अच्छा, मीठा बच्चा होना चाहिए। बहुत मुश्किल, मीठे बच्चे बड़ा मुश्किल...। देखते हो अच्छे–2 मीठे–2 बच्चों को भी माया एकदम...। वो कहते रहते हैं कि सतयुग में नहीं, त्रेता में शेर–बकरी इकट्ठे जल पीते हैं और यहाँ हमारे कई–2 बच्चे एक/दो में बात नहीं करते हैं। आपस में लड़ते रहेंगे। जब तलक नहीं सुधरते हैं तो बाप समझ लेते हैं कि इनके ऊपर ग्रहचारी है। नहीं तो कहाँ गाया भी हुआ है कि पाण्डव दिन में कुछ यहाँ हो जाते थे, रात में फिर खीर खण्ड हो जाते थे। ऐसे कुछ बात है। समझ आती थी, खीर खण्ड हो जाते थे। यहाँ खीर खण्ड होने में बात मत पूछो– तौबा–3! फिर लूण–पानी की किसको आदत नहीं पड़े, नहीं तो जैसे कि लूण का पिण्डी है। लूण का ढिग देखा है? वो मनुष्य नहीं है, फिर एक लूण की पूरी पिण्डी है, जो बस उसी अपने ही उल्टे खयालात में जलती रहती है। जब इस धंधे में लग जाते हैं, बड़ा शौक, बड़ी खुशी होती है, बहुत खुशी होती है; क्योंकि वो जो बिचारे काँटे हैं उनको हम फूल बना रहे हैं। वो जो कौड़ी जैसा जीवन है उनका...। हमारा धंधा ही ये रहा। जैसे बाप हमको कौड़ी से हीरे जैसा बनाते हैं, फिर हमारा धंधा ही ये। हम ये धंधा न किया तो पद कैसे पाएँगे ? इसमें दिल बड़ी सच्ची चाहिए। थोड़ा भी पाप करते हैं तो सौगुणा बन जाता है। अरे, ये पीछे पाप करते–2, गिरते–2 पता नहीं क्या हो जाता है! ...मारो चाहे प्यार करो, हम तुम्हारे दर से कभी नहीं जाएँगे। देखो, ये गारंटी है ना। अभी बाबा परीक्षा नहीं करते हैं। वो तो अपनी ही तकदीर के अनुसार गिर पड़ते हैं; परन्तु वो तो गारंटी है कि चाहे मारो, तभी भी हम दर आपका कभी नहीं छोड़ेंगे। हम जैसी हूँ तैसी हूँ तुम्हारी हूँ, तुम्हारा कभी नहीं...। ..... ज्ञान बहुत सिम्पल है। बाप को याद करना है और ट्रान्सपेरेन्ट बनना है। जितना कम याद करेंगे उतना कम ट्रान्सपेरेन्ट बनेंगे। ट्रान्सपेरेन्ट (का अर्थ) जानते हो? साफ। अभी तो साफ बनना है ना। हीरे तो सभी बनते हो, इसमें कोई शक नहीं है; परन्तु हीरे का फर्क देखा (कि) कितने मूल्य का रहता है ? उतनी एक रत्ती का हीरा 2000, उतनी एक रत्ती का हीरा 30/40 हज़ार होगा। वो कोई मशीन के टूल में लगा देंगे। ये हीरे तो बहुत होते हैं ना। ऐसे मत समझना कि वो साफ हीरा लगाते हैं। नहीं। वो जो बाकी ...सस्ता में लगा ना, वो सभी बहुत–बहुत काम देते हैं। देखो, हम कितनों को बताता है, मेरी बुद्धि में भी तो है ना– कितने टेप रखे हैं, कितने बच्चे हैं। दूसरा कोई ख्याल में नहीं आता ना। अभी ऐसा कोई दूसरा मनुष्य होगा (जिसको) बच्चों का ख्याल होगा। सन्यासी होगा...वहाँ बैठा रहेगा। उनकी वाणी थोड़े ही कहाँ चली जाती है। यहाँ देखो याद करते हैं तो सभी बच्चों को याद करते हैं। मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग और फिर कहते रहते हैं बच्चे, मन्मनाभव यानी याद की यात्रा में तत्पर रहो। बाप को याद करो। अलफ को याद करो और बे को याद करो। अभी देखो, कोई नया यहाँ आकर बैठे, हम कहे– बच्चे, अल्फ को याद करो और बे को याद करते रहो तो तुम विश्व का मालिक बन जाएँगे। जो तुम चाहते हो, जितनी शांति चाहते हो उतनी शांति..., जितना सुख चाहिए इतना सुख लो। अगर .. चाहते हो हमको सुख न मिले, ऐसा तो कोई होगा ही नहीं; क्योंकि फिर तो आना पड़े। तो क्या मुझे दुःखधाम में आना पड़ेगा? तो क्यों नहीं हम सुखधाम ... सतयुग में आवें। तो बोलते हैं जितनी तुमको शांति चाहिए इतनी शांति लो। आना तो ज़रूर है, मोक्ष तो कोई है नहीं। अगर तुम चाहते हो कि हम सदैव शांति में रहें तो अच्छा, याद करते रहो, बस। ज्ञान लो ही नहीं, याद करते रहो। पीछे बहुत जास्ती शांति में जाकर रहेंगे; परन्तु आना फिर पिछाड़ी में पड़ेगा। जो चाहते हैं हम जीवनमुक्ति यानी बाप से वर्सा... बाप से वर्सा तो है ही स्वर्ग का। बाप से वर्सा कोई शांति का नहीं होता है। बाप से वर्सा होता है सुख का। उसमें सुख भी है तो शांति भी है। तो जब दो मिले तो सिर्फ एक क्यों लेवें ? दोनों क्यों नहीं लेवें ? तो ऐसे मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।